कुमार जीवन - 64

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सदा अपने को **"राजऋषि"** समझते हो? **एक तरफ है राज्य, दूसरे तरफ है वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्ति स्वरूप बना देता है** क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो। तो **नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पदम् लेते हो! तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य।** ऐसे राजऋषि हो?

➳ _ ➳ राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। **ऐसी राजऋषि आत्माओं को विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है।** चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं - इस नशे में सदा रहो। **(27-12-1987)**

➢➢ वैराग किस किस से लाना है ?

➳ _ ➳ इस देह से

➳ _ ➳ देह के संबंधो से

➳ _ ➳ देह के धर्मों से

➳ _ ➳ देह के भान से

→ छोटा / बड़ा

→ काला / गोरा

→ मोटा / पतला

→ सुंदर / असुंदर

➳ _ ➳ देह की प्राप्तियों से

➳ _ ➳ देह की इच्छाओं से

➳ _ ➳ देह के पदार्थों से

➳ _ ➳ देह के सुख देने वाले सारे साधनों से

→ टी वी

→ मोबाइल

➳ _ ➳ देह के सुखो से / इन्द्रियों के सुखों से

➳ _ ➳ "मैं और मेरे" से वैराग

➳ _ ➳ देह के पद और पोजीशन से वैराग

➳ _ ➳ अनावश्यक सूचनाओं / व्यर्थ से वैराग

→ जो समाचार जितना दिलचस्प है

- उतना ही वह व्यर्थ है

➳ _ ➳ विकारों से वैराग

→ जब तक विकारों से ही रस अनुभव हो रहा है

- तो उससे छूटेंगे कैसे ?

➳ _ ➳ खाना पीना और उसका विस्तार करना

→ देह को जीवंत रखने के लिए खा रहे हो ?

- या मन की तृप्ति के लिए खा रहे हो ?

→ जीने के लिए खा रहे हो ?

- या खाने के लिए जी रहे हो ?

→ ब्राह्मण जितना खा रहे हैं

- उतना इस देह की आवश्यकता नहीं है

➳ _ ➳ आवश्यकता से अधिक नींद

→ पहले ब्राह्मण काम को जीतता है

→ फिर बाकी विकारों को जीतता है

→ फिर भोजन पर विजय प्राप्त करता है

→ **नींद को जितना सबसे लास्ट और सूक्ष्म पुरुषार्थ है**

- नींद को जितना कोई पुरुषार्थ नहीं है
  - ▸ अपितु यह योगी की श्रेष्ठ अवस्था का Result है
- नींद का दमन करने पर विपरीत परिणाम उत्पन्न होते हैं

➳ _ ➳ वाणी से वैराग

→ यह बहुत ऊंचा और बहुत सूक्ष्म वैराग है

- वास्तव में शब्द कभी भी हमें सत्य तक नहीं ले जा सकते

➳ _ ➳ हंसी मज़ाक से वैराग

➳ _ ➳ Negativity से वैराग

→ Negative बोलना

→ Negative देखना

→ Negative सुनना

➢➢ बेहद का वैराग

➳ _ ➳ देह से प्राप्त होने वाले सभी सुख विनाशी हैं

→ थोड़े समय के लिए सुख प्राप्त होता है

- और उसके बाद वह सुख दुःख में परिवर्तित हो जाता है

➳ _ ➳ वैराग की परिभाषा

→ वै + राग = राग का अभाव

- राग रहित
- आकर्षण रहित
- आसक्ति रहित

→ इस दुनिया के किसी भी समबन्ध / पदार्थ में Disinterested होना

→ "मैं" से Detatched

➳ _ ➳ वैराग उत्पन्न होता है

→ एकांत से

→ इस संसार की नश्वरता के चिंतन से

→ मौन से

→ अंतर्मुखता से

➳ _ ➳ वास्तविक वैराग सुख से उत्पन्न होता है... दुःख से नहीं

→ सब कुछ होते हुए भी उसकी व्यर्थता को जान लेना ... यह वैराग है

- दुःख में तो व्यक्ति को फिर भी सुख की आश बनी रहती है